स्नातक तृतीय खंड प्रतिष्ठा के छात्रों हेतु

काव्य के लक्षण

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग,
एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद

काव्य का अध्ययन, मनन सहृदयों को सदा से ही आकर्षित करता रहा है। कहते हैं न - 'काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्'। मन को रससिक्त कर देनेवाली विधा है। यही कारण है कि कविता की पंक्तियां मन में रच-बस जाती हैं जिन्हें हम गुनगुनाए बिना नहीं रहते। यहाँ तक तो ठीक है किन्तु जैसे ही यह प्रश्न पूछा जाता है कि काव्य क्या है अथवा इसके लक्षण क्या हैं; तो काव्य के अध्ययन का सारा आनन्द तिरोहित हो जाता है। काव्य रचना एक ओर लक्षणों की पहचान एवं व्याख्या सर्वथा दूसरी ओर बात है। काव्य की रचना करना कविकर्म है तथा लक्षणों की पहचान एवं व्याख्या - आचार्यकर्म है। एक में हृदयपक्ष की प्रधानता है तो दूसरे में मानसिक व्यापार की।

भारत में प्राचीन काल से ही जीवन के प्रत्येक पक्ष पर अनवरत चिन्तन मनन होता आया है। सर्वप्रथम भरत हैं जो नाट्यशास्त्र के आदि आचार्य माने जाते हैं। उन्होंने काव्य विशेषतः नाट्य काव्य की बड़ी प्रशंसा की है। उसमें जिन तत्वों की ओर उन्होंने संकेत किया है लक्षण भी हो सकते हैं। किन्तु उन्होंने इसकी परिभाषा नहीं दी है। इनके बाद के आचार्य भामह ने काव्य को परिभाषित किया 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' तात्पर्य शब्द और अर्थ के सहित भाव को काव्य कहते हैं। यद्यपि यह सत्य है कि काव्य में शब्द और अर्थ होते ही हैं किन्तु मात्र इतना ही काव्य की [illegible] है। वस्तुतः इस लक्षण में अतिव्याप्ति [illegible]
[illegible]

व्याकरण, दर्शन जैसे विषय भी काव्य की श्रेणी में आ जाते हैं जो काव्य नहीं हैं। बाद के व्याख्याकारों ने इस सूत्र की नाना प्रकार से इसकी व्याख्या की है। उनमें प्रधान व्याख्याकार डॉ० नगेन्द्र ने कहा कि सामंजस्यपूर्ण शब्द-अर्थ को काव्य कहते हैं। आचार्य दण्डी ने काव्य को अभिलषित अर्थ को व्यक्त करने वाली पदावली माना है। आचार्य दण्डी भामह से थोड़ा आगे बढ़ गये हैं किन्तु काव्य लक्षण का लक्षण ~~अभी~~ अभी भी दूर प्रतीत होता है। इसी परम्परा में आचार्य कुन्तक ने काव्य के लक्षणों को स्पष्ट करते हुए लिखा है -

शब्दार्थौ सहितौ वक्रकवि व्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणि॥

अर्थात आह्लादकारक, कवि व्यापार से युक्त सुन्दर रचना में व्यवस्थित शब्द एवं अर्थ को काव्य कहते हैं। तात्पर्य यह कि अर्थ के वाचक अनेक शब्द हो सकते हैं, उनमें से ऐसे शब्दों का प्रयोग वांछनीय है ~~जिसमें~~ जो विवक्षित अर्थ को पूर्णतः प्रकट कर सके। साथ ही यह इतना रमणीय हो कि सहृदयों को आह्लादित कर सके। इसी प्रकार की शब्द योजना को काव्य कहा जाता है।

रसवादी आचार्य पंडित विश्वनाथ ने काव्य को यों परिभाषित किया है - 'वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्।' देखने में तो परिभाषा बड़ी छोटी है किन्तु इसकी व्यापकता थोड़ी नहीं है। उन्होंने कहा - रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं। इसमें रस शब्द की व्याख्या को जोड़ दिया जाए तो यह लक्षण काव्य को एक नया आयाम देता है।

इसी प्रकार पंडितराज जगन्नाथ ने काव्य को परिभाषित करते हुए लिखा है -

रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दम् काव्यम्।

अर्थात् रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्द को काव्य कहते हैं। इस परिभाषा का 'रमणीयार्थ प्रतिपादक' शब्द व्याख्या की